International Journal of Engineering Research & Management Technology
ISSN: 2348-4039
March-April-2021 Volume 8, Issue-2
Email: editor@ijermt.org www.ijermt.org

हिंदी सिनेमा में महिलाओं का प्रतिष्ठान: सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

डॉ अंजू अग्रवाल

सह आचार्य, हिंदी

बाबा गंगा दास राजकीय महिला महाविद्यालय, शाहपुरा (जयपुर)।

सार

हिंदी सिनेमा में नारी चरित्र-प्रधान फ़िल्मों का एक अलग वर्ग है। हिंदी फ़िल्मों में स्त्री जीवन के सुखमय और दुखमय पक्षों का चित्रण समान रूप से हुआ है। सिनेमा में स्त्री चरित्र के त्याग, अनुराग, मातृत्व, प्रेम, समर्पण जैसे गुणों के महिमामंडित स्वरूप को प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया गया है। सर्वेक्षण पद्धति से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आरंभिक सिनेमा में महिलाओं को भारतीय रीति-रिवाज के अनुसार सुसंस्कृत चित्रित किया जाता था और यदि आधुनिक पहनावे वाला कोई पात्र दिखाया जाता तो महिलाओं को असभ्य और अहंकारी के रूप में चित्रित किया जाता था। लेकिन हाल के वर्षों में भारतीय सिनेमा में महिलाओं के लिए एक खुशहाल दौर देखा गया है, क्योंकि उन्हें अब दर्शकों को सिनेमाघरों में आमंत्रित करने के लिए किसी पुरुष सुपरस्टार की आवश्यकता नहीं है। भारतीय सिनेमा में महिलाएँ और उनकी भूमिकाएँ विकसित हुई हैं।सिनेमा में स्त्री का आगमन स्त्री सशक्तिकरण का जीता जागता उदाहरण है। अभिनय, फ़िल्म निर्माण और निर्देशन, तकनीकी सहयोग एवं इससे जुड़े सभी क्षेत्रों में बिना किसी वर्जना और रूढ़ियों के आज स्त्री सक्रिय है। यह स्थिति भारतीय सिनेमा के आरंभ में नहीं थी। उस युग में सिनेमा को औरतों के लिए वर्जित और अनैतिक क्षेत्र समझा जाता था।

मुख्य शब्द *:- नारी, चरित्र, स्त्री सशक्तिकरण, हिन्दी सिनेमा*

प्रस्तावना

भारत देश अपनी विशेषताओं में सांस्कृतिक एकता वाला देश है। देश में अनेक भाषाओं और बोलियों का अस्तित्व उत्तर आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है। ये भाषाएँ-बोलियाँ अपने क्षेत्र के जनजीवन को प्रतिबिंबित करती हैं और उनके मूल्यांकन के लिए महत्वपूर्ण हैं। इन बोलियों को प्रस्तुत करने का आधार यह भी है कि भारतीय जीवन में सामाजिक दर्शन को बनाए रखने के लिए फिल्मों का निर्माण किया गया था। भारत की वैदिक, पासल, प्राकृत, अपभ्रंश (पुरानी हिंदी), सौरैनी अपभ्रंश, पश्चिमी हिंदी और फिर खड़ी बोली का निर्माण भारत के दिल्ली, मेरठ, गाजियाबाद, निवारणपुर में हुआ। ,कन्नौज, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश और अन्य राज्य। हिन्दी वैसे तो हिन्दी क्षेत्र की भाषा के रूप में विद्यमान थी, परन्तु उसका प्रसार कश्मीर से कन्याकु होते हुए गुजरात तक पहुँच गया। इसके प्रभाव को देखते हुए हिंदी फिल्म उद्योग में हिंदी का महत्व बढ़ गया। हिंदी भाषा और खड़ी बोली वरदान साबित हुई और दार्शनिक, व्यवस्थित और तुलनात्मक विचारों पर आधारित कई हिंदी फिल्मों ने भारत में लोकप्रियता हासिल की। फिल्म 'मदर इंडिया' ने हिंदी फिल्म जगत में सामाजिक दर्शन के क्षेत्र पर गहरा प्रभाव छोड़ा।

हिन्दी सिनेमा सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं से गुजरने वाला एक दृश्य है जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, सिद्ध, कृषि, ग्राम-पुरुष, पुरुष-पुरुष और दलित-गश-उच्च-गश, समाजीकरण-युद्ध शामिल हैं।

तीव्रता औद्योगीकरण, प्रौद्योगिकी, विज्ञान आदि क्षेत्र शामिल हैं। एक सक्रिय सामाजिक प्राणी होने के नाते, वह जन्म से पहले (ग्रीष्म ऋतु में) और मृत्यु के बाद (सामाजिक जीवन के रूप में) कई भूमिकाएँ निभाता है। समाज में मनुष्य बनता-बिगड़ता नहीं है। नहिं नहिं एंसैट-एंटी को देखने वाले-लोगों को। मनुष्य या हर प्राणी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष की स्थिति में है। यह संघर्ष ही समाजवाद का सार है। इसमें मनुष्य दूसरों के साथ प्रतिस्पर्धा में आता है और संबंध स्थापित करता है। सबसे छोटी इकाई परिवार होती है और इसके मुखिया को परिवार का मुखिया कहा जाता है। परिवार का मुखिया सामाजिक दर्शन देता है। सिर बाजू को धारण करता है और सिर समाज में जाकर सामाजिक गतिविधियों में अपनी भूमिका निभाता है। सिर के बाद सिर बाजू धारण करता है और सिर समाज में जाकर सामाजिक गतिविधियों में भूमिका निभाता है। इन्हें यम के रूप में व्यवस्थित किया जाता है। इसी प्रकार हर गांव की अपनी ग्राम पंचायत, पंचायत, ब्लॉक होता है। वे जिले, राज्य और देश की सभी सीमाओं पर निरंतर भ्रमण करते रहते हैं और जहां भी पड़ाव आता है, वहां अपना सामाजिक दर्शन व्यक्त करते हैं। इस यात्रा के दौरान वे गांवों, जातियों, धर्मों, स्त्री-पुरुषों, वर्गों और जातियों, पाटत्य-देवी संप्रदायों, ज्ञान-अज्ञान, अमीरी-गरीबी, किसान-मजदूर, वन्यजीव-पशुओं को पार करते हुए सामाजिक दर्शन की श्रेणी में आते हैं।

हिंदी फिल्म 'मदर इंडिया', जो अंग्रेजी नाम 'मदर इंडिया' से संबंधित लगती है, 'मदर इंडिया' शब्द का अनुवाद है। फिल्म निर्माण का उद्देश्य एक महिला पात्र राधा के माध्यम से एक महिला के जीवन के ग्रामीण परिवेश को दिखाना था। यह फिल्म 1957 में रिलीज़ हुई थी। 10 साल देने के बाद मैं दुनिया और ग्रामीण जीवन और ग्रामीण जीवन की उपस्थिति में शामिल हो गया हूं। "सिंदी सिनेमा में जब फकी 'बारी' बनाई जा रही होती है तो उसे एसेंशियल फिल्में देखने के लिए दी जाती है, जिसमें (1957) ईस्टियन फिल्में देखने के लिए दी जाती है. ऐसा कहा जाता है कि अगर आप आपकी 'मदर इंडिया' नहीं देखी तो सिंधी फिल्में नहीं देखीं। आज पुरानी फिल्मों के रीमेक बनाने की होड़ मची है और ये रीमेक पुरानी फिल्मों के संकट से भी नहीं बच पाते। पूछो तो एक ही मन्ना रीमेक बनी है भारतीय सिनेमा में और दूसरी मोबहब खान की 'मदर इंडिया' थी। यह मुंबई की 1940 की फिल्म औरत का रीमेक थी। आज अगर किसी सिंधी रीमेक को 'मनान' कहा जा सकता है तो वह 'मदर इंडिया' नहीं है। यह की यात्रा का दस्तावेज है मनुष्य, विशेषकर भारतीय ग्रामीण महिला। वहाँ एक कैनवास है, विशिष्ट भारतीय जीवन को दर्शाने वाला एक दृश्य चित्रित किया गया है। यह एक काव्यात्मक कविता है, जो समय की सीमाओं को पार कर गई है।

भारतीय हिंदी फिल्म मदर इंडिया में समाज

भारतीय समाज में हिंदी फिल्मों में समाज के बिना कोई भी कल्पना नहीं की जा सकती। मदर इंडिया फिल्म में भारतीय समाज के अंतर्गत महबूब खान फिल्म निर्माता ने ग्रामीण जनजीवन, नारी चित्रण, उच्च-निम्न वर्ग, पुरुष-स्त्री, सहित भारतीय संस्कृति को भी स्थान दिया है। भारतीय समाज में यह फिल्म तब 1957 ई में आई; जब देश को आज़ाद हुए 10 वर्ष भी सही से नहीं हुए थे। भारतीय समाज में इस फिल्म का समाज दर्शन के अंतर्गत अत्यधिक सामाजिक पक्ष के दर्शन हुए तथा उसमें भी विशेषकर ग्रामीण जन जीवन के एक नव विवाहिता से बनी विधवा जीवन जीती महिला किसान के जनजीवन का अंकन है। उपरोक्त फिल्म में समाज के निम्नलिखित दर्शनों पर प्रकाश डाला

भारतीय सिनेमा में महिलाओं की बदलती छवि

अवधि 1913-1980: शुरुआती दिनों में, भारतीय सिनेमा पौराणिक कहानियों और महान महाकाव्यों पर केंद्रित था। पहली फीचर फिल्म राजा हरिश्चंद्र एक पौराणिक कहानी थी। फिर स्वतंत्रता संग्राम काल के दौरान, भारतीय सिनेमा गुस्से को व्यक्त करने और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से आजादी की मांग करने का एक माध्यम बन गया। स्वतंत्रता के बाद,

भारतीय सिनेमा ने सामाजिक मुद्दों और समस्याओं को उठाया और एक ऐसे समाज का चित्रण करने पर ध्यान केंद्रित किया जो न केवल वांछनीय था बल्कि प्राप्त करने योग्य भी था।

1950 के दशक से 1970 के दशक के अंत तक की अवधि को बॉलीवुड फिल्मों का स्वर्ण युग माना जा सकता है। इस समय फिल्में हमारी समृद्ध संस्कृति, ग्रामीण क्षेत्र, परिवार और मैत्रीपूर्ण संबंधों, रीति-रिवाजों, मानदंडों और नैतिकता पर केंद्रित थीं। गरीबी के मुद्दों पर भी प्रकाश डाला गया। सुंदरता पर्दे पर पात्रों के साथ दर्शकों की आसान पहचान में निहित है। महिलाओं ने फिल्मों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उनके कंधों पर फिल्मों को बाजार में बेचने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी। फिल्मों में पुरुष कलाकारों के साथ-साथ महिलाओं को भी समान रूप से प्रमुख भूमिका दी गई। इस युग की कुछ प्रमुख फ़िल्में जैसे कागज़ के फूल, मदर इंडिया, पाकीज़ा, हाफ टिकट और पड़ोसन को उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए आइए 1957 में निर्देशक मेहबूब द्वारा बनाई गई फिल्म "मदर इंडिया" पर चर्चा करते हैं। वह समाजवादी आदर्शों को पारंपरिक मूल्यों के साथ जोड़ने का प्रयास करते हैं। फिल्म मदर इंडिया की शुरुआत राधा से होती है, जिसे एक बूढ़ी महिला के रूप में उसके गांव के माध्यम से निर्मित एक नई नहर का उद्घाटन करने के लिए कहा जाता है। समारोह की अध्यक्षता करने वाले पुरुष साधारण कपड़े पहनते हैं, और राधा को गाँव की माँ कहते हैं। उन्होंने उनके अलावा किसी को भी नहर का उद्घाटन करने से मना कर दिया।

फिल्म एक शुरुआती टिप्पणी के साथ शुरू होती है कि राधा एक जीवित महिला है और समृद्धि और विकास के नए दौर का नेतृत्व करेगी। फिल्म एक महिला होने के महत्व को दर्शाती है। भारत माता शब्द भारतीय चेतना का एक हिस्सा है। फिल्म के एक गाने में बताया गया है कि शादी के बाद माता-पिता का घर छोड़ना महिला का भाग्य है। इसके गानों के बोल काफी इंटेंस हैं. फ़िल्म के एक गीत में कहा गया है कि केवल "लाज ही औरत का धर्म है"।

राधा को एक आदर्श पत्नी और बहू के रूप में एक आम महिला के रूप में चित्रित किया गया है। उसके पास अपने पति के लिए एक दिव्य शक्ति है। वह बहुत जिम्मेदार और बुद्धिमान है. इस फिल्म को देखने वाली महिलाएं आसानी से उसे पहचान लेती हैं और पुरुष उसे गैर-यौन दृष्टि से देखते हैं, और उसे अपनी पत्नी या मां के रूप में पहचानते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय सिनेमा में महिलाओं की बदलती छवि का अध्ययन करना
2. वर्तमान परिदृश्य में महिलाओं के चित्रण का अध्ययन करना

सामाजिक दर्शन सम्बन्धी फिल्म के भीतर और बाहर दोनों समाज के दर्शन होते हैं। हमें सामाजिक दर्शन के रूप में भारत देश में गरीबी के दर्शन होते है। फिर भी विवाह को अत्यंत आवश्यक मानकर ऋण लेते समाज को देखते है। जो ऋण लिया जाता है वहां अशिक्षा मध्य खड़ी हो जाती है और शिक्षित व्यक्ति लाला अपनी शिक्षा का गलत फायदा उठाकर गरीब जनता को नाजायज ऋण लगाता है तथा हर फसल पर अपना हिस्सा लेने आ जाता है। गरीब किसान अपनी माँ, बाप, दादी और अन्य को ऋण के बोझ के कारण उनका शारीरिक और मानसिक विकास नहीं कर पाता है। किसान भूख से मरता है और साहूकार उनका अधिक शोषण करता; निरंतर ऐसा चलता रहता है। यहीं स्थिति गाँव के सभी किसानों की बनी हुई है। सभी लाला के कर्ज के तले दबे हुए है। लाला से तंग आकर एक सच्चा किसान डाकू तक बन जाता है और अपना

बदला लेता है। परन्तु उससे बड़ी सच्ची- महिला - किसान अपने डाकू बेटे को गोली तक मार डालती है। गाँव की इज्जत के कारण।

समाज में नारी चित्रण, नारी-विमर्श एवं नारी संघर्ष की गाथा के दर्शन भी होते हैं। राधा नई-नवेली दुल्हन रूप में शामू के घर आती है। घर आते ही उसे पति के लग्न ऋण का पता चलता है और बंजर भूमि पर खेती करने का साहस अपने पति संग करती है। जिसमें उसका एक बैल मरने से वह और गरीब हो जाते हैं और घर में खाने को कुछ भी नहीं होता। बालक भूखे मरते देख घर के पीतल के बर्तन बेचकर वह मिटटी के बर्तनों में भोजन करते है और पति के दोनों हाथ ख़राब हो जाने पर अपने पति, बच्चों और दादी की भी सेवा करती है। शामू एक रात राधा, अपने बच्चों और अपनी माँ को छोड़कर चला जाता है तब भी वह हिम्मत नहीं हारती और उसका इंतजार करती रहती है। तभी कुछ दिनों पश्चात उसकी सास गुजर जाती है और वह अपने बच्चों संग अकेली सी हो जाती है। वह (राधा) अपने बच्चों को जवान करती है और अपनी सास का लिया कर्ज उतारती रहती है परन्तु उसका मूल वहीं खड़ा रहता है। मूल खड़ा रहना उनके घर की आर्थिक स्थिति बिगाड़ने के लिए काफी होती है। बच्चे जवान हो जाते है और उधर पति की याद राधा को आती रहती है। राधा को बच्चों के विवाह की चिंता होती है जिसमें से एक रामू का विवाह हो जाता है जबकि बिरजू का विवाह नहीं हो पाता को लेकर दुखी होती है। जिसमें माँ के ममत्व, त्याग, तपस्या, संघर्षशील, कर्तव्यनिष्ठ, सत्यवादी, स्वाभिमानी, आदर्श

पत्नी- माँ-बेटी-काकी आदि भूमिकाओं के दर्शन होते हैं। नारी अधिकतर भाग्य भरोसे देखी जाती है। चूल्हे पर खाना पकाना, खेतों में बैल चलाना, कुएं से पेय जल लाना, जन्म देने की जिम्मेवारी, बच्चों को कहानी सुनाना, पति की चिंता में शामिल होना, सास की सेवा, 'समय' आपने अपने अपने जेवर देना, अपाहिज पति की सेवा, बच्चों का पालन-पोषण, गर्भवती होने पर भी भूख से समझौता न करना, जीवन को एक संघर्ष मानकर चलना, बाढ़ में संरक्षिका बनना, गाँव के लोगों को पलायन से रोकना, अपनी इज्जत की रक्षा करना, देवी पर सवाल, ब्राह्मणवाद पर तंज, बेटों के लिए लड़की का हाथ मांगने जाना,

सांस्कृतिक

सांस्कृतिक सम्बन्धी ग्रामीण समाज में धरती माता के रूप में कृषि की पूजा के दर्शन होते है जो भगवान् की आस्था संग है। बांध के लिए मुहरत को शुभ मानते है। समाज में परिवार सबसे छोटी इकाई को जोड़ने के लिए विवाह नियम है। जिसमें हिन्दू रीति-रिवाज के दर्शन होते हैं। लोक-गीतों को विवाह के समय गाया जाता है। नई दुल्हन से अधिक काम नहीं कराया जाता। वैवाहिक जीवन में रोमांस के लिए 'घर में माँ और बाहर दुनियां का डर' दीखता है। हर व्यक्ति भगवान् काम करने वाली कर्मठ व्यक्ति की कामना करता है। पत्नी अपना सबकुछ अपने पति को सौंप देती है। पति भी पत्नी से 4 वर्ष में 4 बच्चों की कामना रखते है। समाज में बेटे के जन्म पर अधिक ख़ुशी मनाई जाती है और अन्नदान किया जाता है। गाँव में पुलिस का आना अशुभ माना जाता है। जब लाला सुखी अपने रुपयों को जबरदस्ती मनवाने की धमकी देता है तो सब पञ्च पुलिस को अपने गांवे में अशुभ का संकेत देते है। सास-बहु और दादी पोता प्रेम समाज में देखने को मिलता है। इन कहानियों में काल्पनिकता होती है जैसे- सात दूम वाला चूहा समाज में जातिवाद के भी दर्शन होते हैं जब लाला अपने अंहकार में आकर कहता है कि, 'यदि ऐसा न हुआ तो सुखी लाला नहीं भंगी कहना'। जिससे समाज में जातिवाद के भी दर्शन होते हैं। मांग मिटाना अशुभ माना जाता है जब शामू राधा की रात में मांग मिटाकर चला जाता है तो लोग उसे मरा हुआ ही मानकर चलते है। समाज में विधवा-विरह को कोई अथाह सीमा नहीं होती। उसका दर्द उसके आलावा कोई समझने वाला नहीं होता। राधा 40 बरस विधवा बन संघर्ष करती नज़र आती है। ब्राह्मणों को मरे पर खाना खिलाना समाज में अच्छा माना जाता है जबकि कुछ लोग उसका विरोध करते कहते है कि, "मरे की आत्मा पर खाये, जिन्दा आत्मा को जीने न दिये जाये"। एक स्थान पर ज्योतिराव फुले लिखते है कि, "ब्राहमण-पंडा-पुरोहित लोग अपना पेट पालने के लिए, अपने पाखंडी ग्रंथों द्वारा, जगह-जगह, बार-बार, अज्ञानी शूद्रों को उपदेश देते रहे, जिसकी वजह से उनक मन-मस्तिष्क

में ब्राह्मणों के प्रति पूज्यभाव पैदा होता रहा। "" गाँवों में बाढ़ अक्सर आती रहती है जिसमें राधा का सारा घर तबाह हो जाता है और फिल्म के अंत में एक बांध का निर्माण होता है। देवियों का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व को दर्शाया गया है। देवी से अपने सुहाग की कामना की जाती है। विवाह के लिए पहले विवाह - कुंडली पंडित से मिलाई जाती है। गाँव की बेटी की इज्जत को सबसे ऊपर माना जाता है। ग्रामीण लोग चोरी सहन कर सकते हैं परन्तु छोरी छेड़ना बर्दास्त नहीं कर सकते। तब सारा गाँव एक हो जाता है ऐसे व्यक्ति के खिलाफ़। समाज में कंचे से जुए वाला खेल खेला जाता है। ग्रामीण मनोरंजन हेतु नृत्य भी आयोजित करते हैं जिसमें दो लड़कियों एक लकड़े और दूसरी एक लड़की की भूमिका में प्रेम-प्रसंग का आयोजन गीतों के माध्यम से करते है। वार्षिक होली के त्यौहार पर सभी ग्रामीण लोग- लुगाई मिलजुलकर होली खेलते है भारतीय संस्कृति की पहचान को दर्शाते है।

हिंदी फीचर फिल्म में समाज के सामाजिक रूप में ग्रामीण, न्याय रूप में पंचायत, आर्थिक व्यवसाय रूप में कृषि, सांस्कृतिक रूप में जनजीवन, सहित नारी के विभिन्न जन-जीवन सहित देश में व्यवस्था रहन-सहन, मत-मतान्तर, विश्वाश - अविश्वास, रीति- रिवाज, पहनावा ओढना, खेल-जुए, प्रतियोगिता एवं मनोरंजन आदि के दर्शन करते है। सच मायने में मदर इंडिया फिल्म में भारतीय समाज का आज़ादी के पश्चात, आज़ादी के पूर्व पपृष्ठभूमि की सार्थक अंकन किया गया है। जो आने वाली फिल्मों के लिए मार्गदर्शन किया। महिला और पुरुष किसान कितना मार्मिक चित्रण हुआ है ऐसा समाज में आज के आधुनिक युग कभी भी देखने को नहीं मिलेगा। भूख मुक्ति ही जिसकी आत्मा मुक्ति हो वहां जीवन की दार्शनिकता के आधार बिम्बों को प्रश्नचिन्ह लग जाते है, बाल मनोविज्ञान के सामाजिक दर्शन हमें दिखाई देते हैं। इसके बावजूद सच्चे अर्थों में हिंदी फिल्म 'मदर इंडिया' भारतीय समाज के सूक्ष्मदर्शी है।

निष्कर्ष

सिनेमा साक्षरता में हिंदी विभागों की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती थी लेकिन इस दिशा में अभी ठोस प्रयास करना शेष है कि निर्देशक स्त्री से जुड़े मुद्दों को और गंभीरता से उठाएं। इसके लिए सिने-साक्षरता की दिशा में गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है, जिससे अच्छे सिनेमा को सराहा जा सके। जब तक अच्छी फिल्मों की समझ विकसित नहीं होगी तब तक अच्छी फिल्में नहीं बनेंगी। इस दिशा में हिंदी विभागों को अपनी भूमिका तलाशनी होगी। हिंदी के जो साहित्यकार सिनेमा की दुनिया से निराश होकर लौट आए, उन्हें समझना चाहिए था कि यह एक अलग माध्यम है। इसकी जरूरतें अलग है। पंडित प्रदीप, नरेंद्र शर्मा, नीरज, राही मासूम रजा, जगदम्बा प्रसाद दीक्षित जैसे अनेक विद्वान है जिन्होंने सिनेमा की विशेषताओं को समझा और इस क्षेत्र में सफल रहे। इस प्रकार यौनिक निहार को वैधता प्रदान कर वह शेष आख्यान में अपने नैतिक दायित्वों का निर्वाह कर सकता है। फ़िल्म अध्ययन के लिए चुनौती यह है कि वह सिनेमा की उपरोक्त रणनीति की बारीकियों को समझने और उनकी व्याख्या के लिए उपयुक्त सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य तैयार करने की दिशा में सोचे'। आज जब हमारी फिल्में बहुत सिद्दत से स्त्रियों के मुद्दों का जनानुवाद करके जन-जन तक पहुँचाने की चेष्टा कर रही हैं हमें भी आगे बढ़कर अपने दायित्व को समझना होगा।

संदर्भ सूची

1.संपादक प्रो. कमला प्रसाद (संपादक), फिल्म का सौन्दर्यशास्त्र और भारतीय सिनेमा, शिल्पायन, दिल्ली, संस्करण 2010, पृष्ठ 213 (अरुण कुमार का लेख 'पर्दे पर औरत')

2.विजय रंचन, बॉलीवुड की नारीगाथा, शिल्पायन, दिल्ली, संस्करण 2015, पेज 102

3.अजय ब्रह्मात्मज, सिनेमा-समकालीन सिनेमा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2006, पृष्ठ 204

4.जवरीमल पारख, हिंदी सिनेमा का समाजशास्त्र, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2006, पृष्ठ 191

5.डॉ गीता चावड़ा (मूल लेखक), डॉ रामगोपाल सिंह (अनुवादक), नारीवाद के विविध परिप्रेक्ष्य, शांति प्रकाशन, हरियाणा, पृष्ठ 100

6.दत्ता एस. वैश्वीकरण और भारतीय सिनेमा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व। सामाजिक विज्ञान. 28 (2000): 71-82.

7.बुटालिया यू. भारतीय सिनेमा में महिलाएं. नारीवादी रेव 17 (1984):108-110।

8.जैन जे, राय एस. फिल्म्स और नारीवाद। नई दिल्ली: रावत प्रकाशन, (2002)।

9.उबेरॉय पी. भारतीय कैलेंडर कला में स्त्री पहचान और राष्ट्रीय लोकाचार। इकोनॉमिक पॉलिटिकल वीकली 25 (1990): डब्लूएस41-डब्लूएस48।

10. तबताबाई रा. भारतीय सिनेमा में महिलाएँ और उनका चित्रण। (2016)।

11. सिब्बल. भारतीय सिनेमा में रूढ़िवादी महिलाएं (2018)।

12. आचार्य डीआर, बेल जेएस, सिमखाडा पी, वैन तेजलिंगन ईआर, रेग्मी पीआर। घरेलू निर्णय लेने में महिलाओं की स्वायत्तता: नेपाल में एक जनसांख्यिकीय अध्ययन। रिप्रोड्यूस हेल्थ 7 (2010):15.

13. बेस्ली सी. लिंग और लैंगिकता। लंदन: सेज प्रकाशन, लंदन। (2005)।

14. मोनिका एम. हिंदी फिल्म नायिका का बदलता चेहरा, जी मैगज़ीन ऑनलाइन। (1996)।

15. सिंह I. भारतीय सिनेमा में लिंग संबंध और सांस्कृतिक विचारधारा: साहित्यिक ग्रंथों के चुनिंदा अनुकूलन का एक अध्ययन, गहन और गहन प्रकाशन। (2007)